# सैकगुएया

डेविड, चित्र : डैन ब्राउन, हिंदी : मीनू नेगी रौथाण

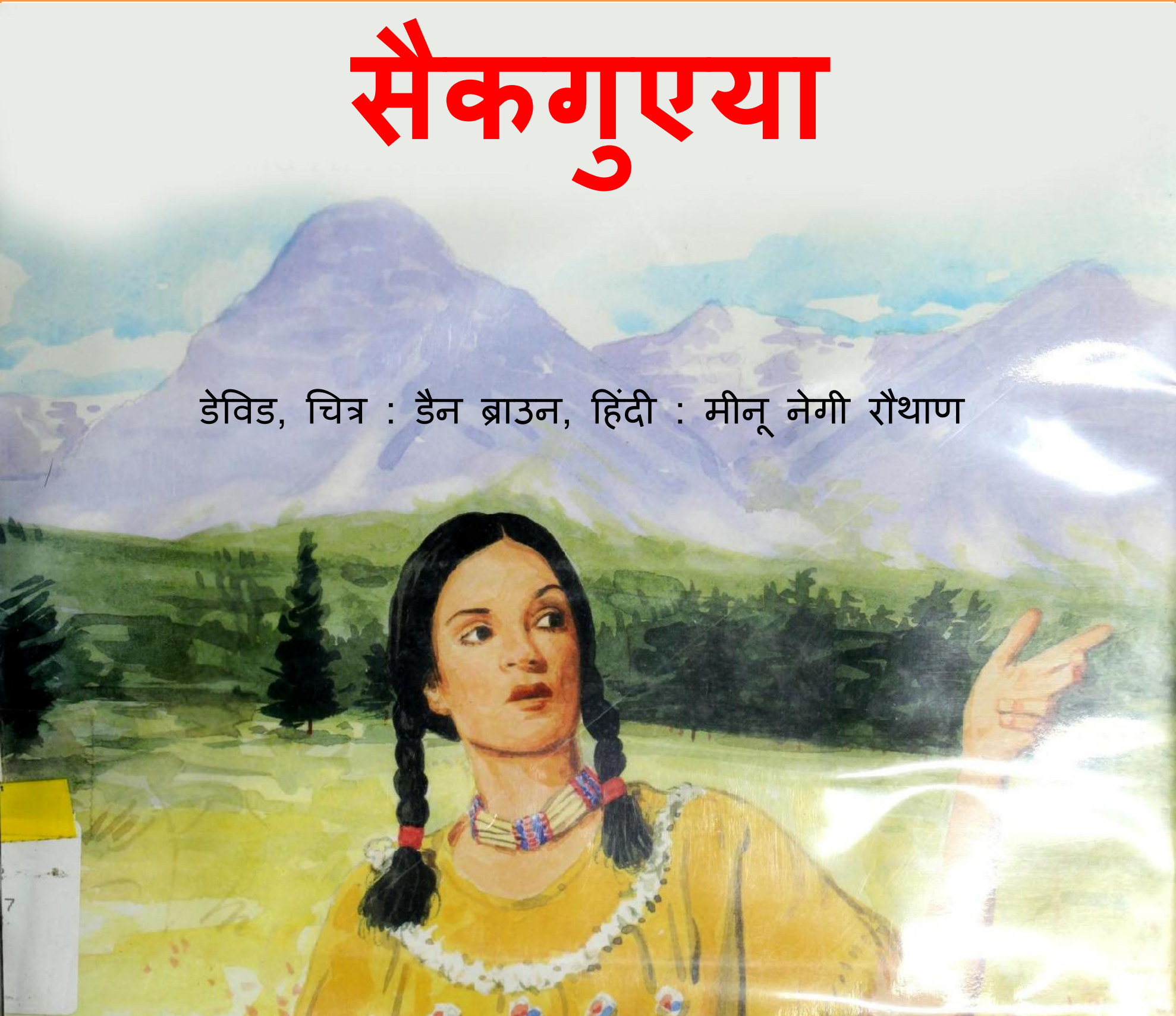

सैकगुएया, शोसोफोन जनजाति की बेटी थी. सैकगुएया का बहुत कम उम्र में ही दुश्मन जनजातियों ने अपहरण कर लिया था. इसलिए उसकी परवरिश अपनी जनजाति से दूर हुई. सैकगुएया का अपहरण उसे अपने लोगों से दूर ले गया. पर शायद उस वजह से वो अमरीका के इतिहास में एक बहुत महत्वपूर्ण इंसान बनी.

क्योंकि सैकगुएया, हिदासस लोगों के साथ रह रही थी इसलिए वो दो अन्वेषकों क्लार्क और लेविस से मिल पाई. यह दोनों अन्वेषक पश्चिम के अनजाने क्षेत्र की खोजबीन कर रहे थे. यह वो विशाल इलाका था जो अमेरिका के विस्तार और फैलाव के लिए बेहद ज़रूरी था. क्लार्क और लेविस को अपनी खोज के अभियान में एक अच्छे अनुवादक और भरोसेमंद दुभाषिए की ज़रुरत थी. सैकगुएया ने यह दोनों रोल बखूबी निभाए.

सैकगुएया एक बहादुर महिला थी. उसके जीवन की कहानी रोचक और प्रेरक दोनों है.

# सैकगुएया

डेविड, चित्र : डैन ब्राउन, हिंदी : मीनू नेगी रौथाण

LIBERTY
IN GOD
WE TRUST
2000
P

सैकगुएया का जन्म 1788 या 1789 में पश्चिमी चट्टानों की पर्वतमाला में हुआ था. वह अमेरिकी मूल की एक जनजाति - शोसोफोन की थी.

शोसोफोन जनजाति टेपी (तीन बांस के तम्बुओं) में रहते थे और बदलते हुए मौसम के हिसाब से भोजन इकट्ठा करते थे. वे बीज, जामुन, जड़ें, और कीड़े खाते थे. वसंत और गर्मियों के दिनों में वे मछली पकड़ते और सर्दियों में जंगली भैंसों का शिकार करते थे. शोसोफोन जनजाति, जंगली खरगोश, हिरन और अन्य जानवरों का भी शिकार करते थे. सुंदर टोकरियाँ, टोपियाँ और जाल बनाने के लिए वह पेड़ों की शाखों का उपयोग करते थे.

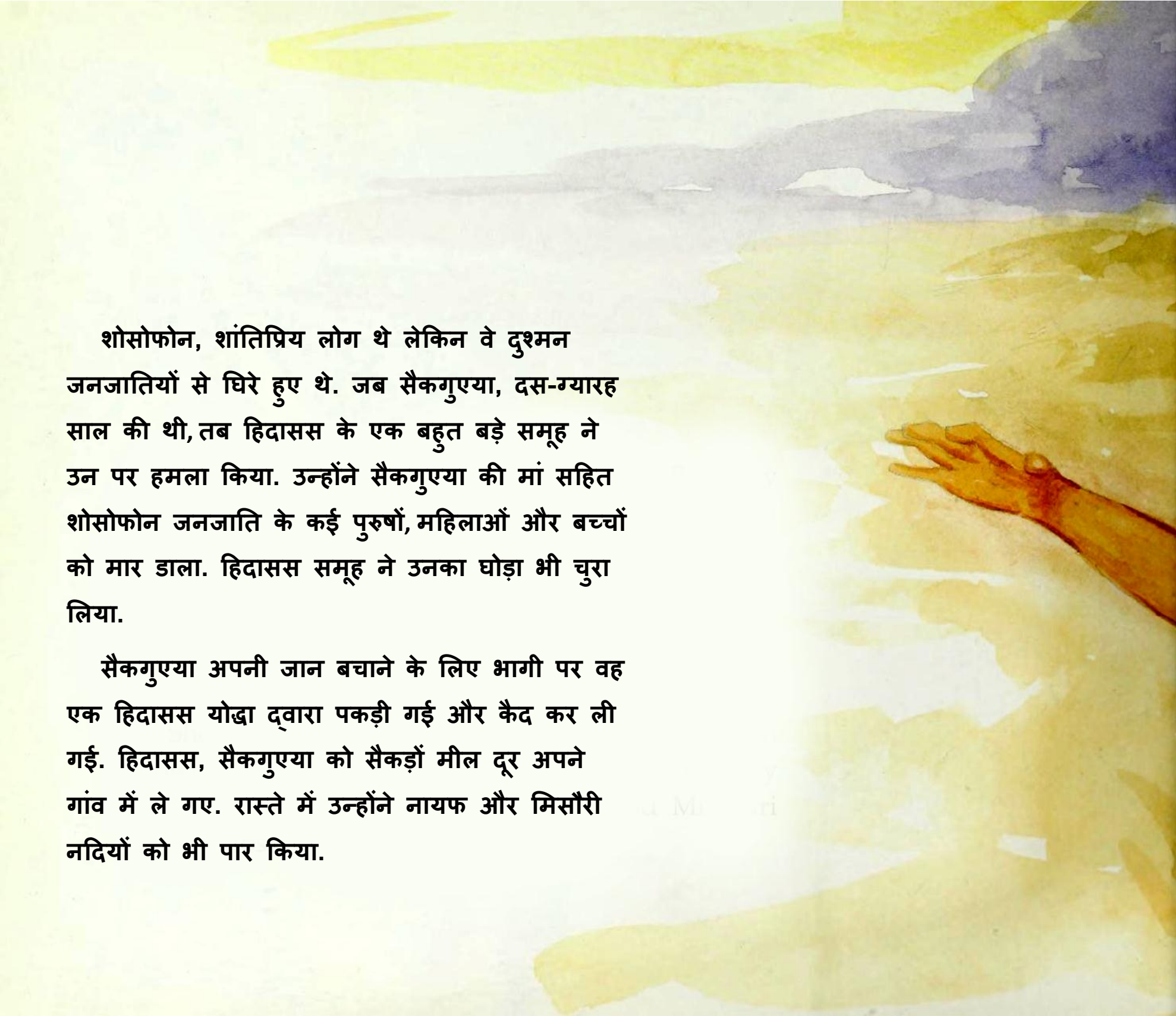

शोसोफोन, शांतिप्रिय लोग थे लेकिन वे दुश्मन जनजातियों से घिरे हुए थे. जब सैकगुएया, दस-ग्यारह साल की थी, तब हिदासस के एक बहुत बड़े समूह ने उन पर हमला किया. उन्होंने सैकगुएया की मां सहित शोसोफोन जनजाति के कई पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को मार डाला. हिदासस समूह ने उनका घोड़ा भी चुरा लिया.

सैकगुएया अपनी जान बचाने के लिए भागी पर वह एक हिदासस योद्धा द्वारा पकड़ी गई और कैद कर ली गई. हिदासस, सैकगुएया को सैकड़ों मील दूर अपने गांव में ले गए. रास्ते में उन्होंने नायफ और मिसौरी नदियों को भी पार किया.

हिदासस जनजाति, शोसोफोन जनजाति के लोगों की तुलना में लम्बे और हल्के रंग के थे. वे एक अलग भाषा बोलते थे. हिदासस जनजाति के लोग भोजन इकट्ठा करने के लिए घूमते नहीं थे. इसकी बजाए, वे मक्का, फलियों, स्क्वॉश की खेती करते, मिट्टी के मकानों में रहते और मिट्टी के बर्तन बनाते थे. उन्होंने मिसौरी नदी को पार करने के लिए नौकायें भी बनायीं थीं.

सैकगुएया, हिदासस लोगों के साथ खेतों में काम करती. वह सब्जियों को सुखाने और संरक्षित करने में भी उनकी मदद करती, ताकि सर्दियों में वे उन्हें इस्तेमाल कर सकें. सैकगुएया, हिदासस लोगों के बीच रहने के बावजूद अभी भी उनकी बंधक थी.

कुछ वर्षों के बाद हिदासस समूह ने, सैकगुएया को, एक अंग्रेज व्यापारी - तौसेंट कैरबनेउ - एक शिकारी को बेंच दिया. कैरबनेउ चालीस वर्ष का था. वह कड़क मिजाज का आदमी था. उसकी पहले से एक पत्नी और बेटा था. उसने सैकगुएया को अपनी दूसरी पत्नी के रूप मैं ख़रीदा था.

1804 में राष्ट्रपति थॉमस जेफरसन ने, मिसौरी नदी का पता लगाने और प्रशांत महासागर के लिए मार्ग ढूंढने के लिए दो अंग्रेज खोजकर्ताओं - कप्तान मेरिफेर लुईस और विलियम क्लार्क, चालीस सैनिकों और सीमावर्ती नाविक का एक खोजी-दस्ता भेजा था. खोजी-दस्ते को पश्चिम इलाके में नए-नए पौधे और जानवर खोजना, और मूल अमेरिकियों की जनजातियों के बारे में पता लगाना था. साथ में उन्हें वहां की जनजातियों को संयुक्त राज्य अमेरिका के बारे में भी जानकारी देनी थी. नदी के मार्ग पर खोजी-दस्ते को कई मूल अमेरिकी जनजातियों का सामना करना पड़ा, जिनमें येनकटन सिओक्स, टीटोन सिओक्स और अरिरकार जनजातियां शामिल थीं.

सैकगुएया के बेंचे जाने के तुरंत बाद खोजी-दस्ता हिदासस लोगों के गांव में पहुंचा.

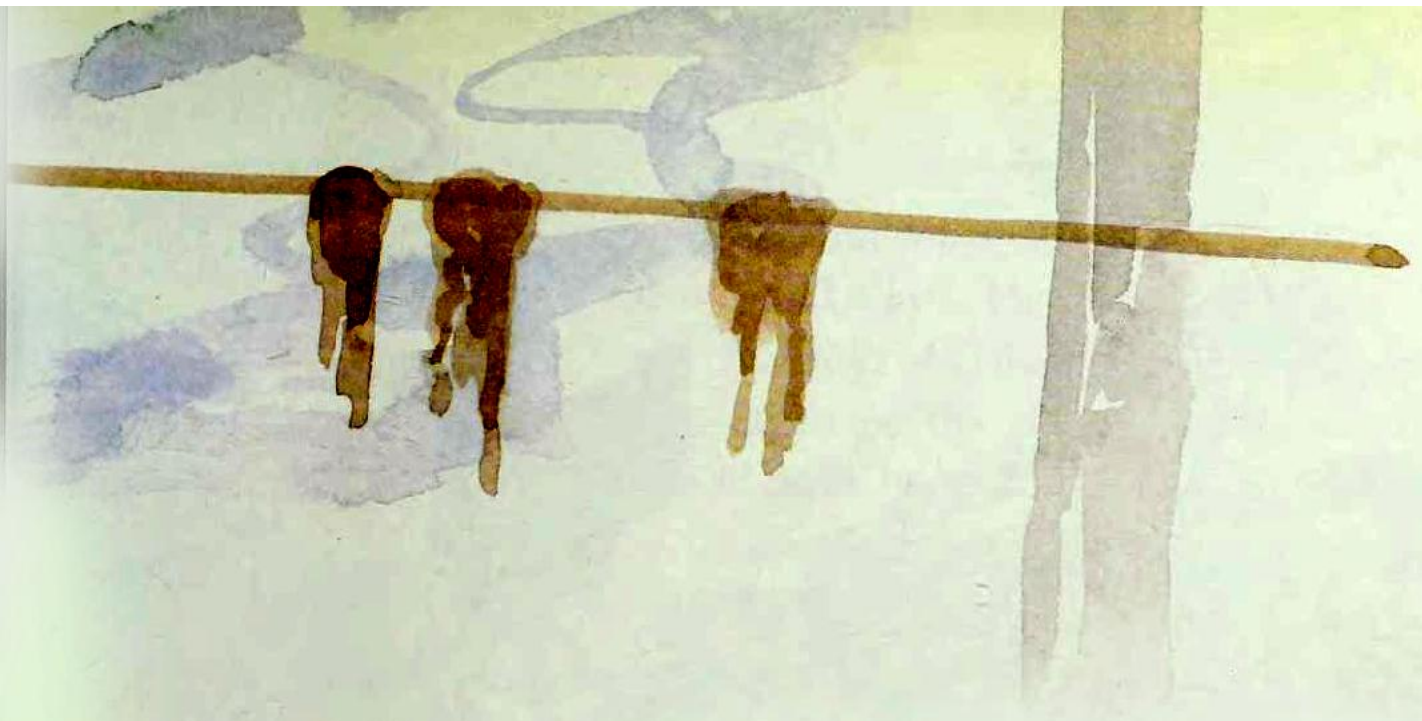

लुईस और क्लार्क के आगमन ने वहाँ के लोगों का काफी ध्यान आकर्षित किया.

हिदासस जनजाति ने सपाट तल वाली नावें पहले कभी नहीं देखी थीं, जो उन खोजकर्ताओ के पास थीं. न ही उन्होनें कभी वायलिन का संगीत सुना था. लेकिन यॉर्क से मिलना कप्तान क्लार्क के लिए एक बड़ा आश्चर्य था. वह उनका सेवक था. कप्तान क्लार्क पहली बार किसी काले आदमी से मिले थे.

लुईस और क्लार्क कई स्थानीय प्रमुखों से मिले. उन्होंने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर सर्दियों के लिए एक किले का निर्माण किया. उन्होंने पेड़ों को काटकर मंदन किले को तैयार किया. उसमें लकड़ी के आठ छोटे कमरे थे.

कैरबनेउ, सैकगुएया के साथ लुईस और क्लार्क से मिलने आया. उसने उन्हें बायसन-चमड़े के वस्त्र भेंट किए और कहा कि वह उनकी मदद कर सकता था. हालाँकि वो सभी जातियों की भाषाएं नही बोल सकता था, लेकिन फिर भी वह इशारे से उन सभी जनजातियों से बात कर सकता था जिनसे लुईस और क्लार्क मिलने वाले थे.

फिर खोजी-दल ने कैरबनेउ को एक दुभाषिया के रूप में काम पर रखा, क्योंकि समूह को शोसोफोन क्षेत्र से गुजरना था. सैकगुएया भी उनके साथ चली.

कड़ाके की ठंड पड़ रही थी. कैरबनेउ और सैकगुएया खोजकर्ताओं के साथ सर्दियों भर मंदन किले में रहे.

उस समय सैकगुएया गर्भवती थी. फरवरी 1805 में, उसने एक पुत्र - जीन बैप्टिस्ट, को जन्म दिया.

अप्रैल की शुरुआत में, जमी हुए मिसौरी नदी पिघलना शुरू हुई. खोजकर्ताओं ने काले हंसो को, उत्तर में उड़ान भरते हुए देखा. उन्होंने केलबोट और कुछ लोगों को राष्ट्रपति जेफरसन के पास रिपोर्ट और उपहार लेकर सेंट-लुईस वापिस भेजा. उनके साथ नौ संदूकों में जानवरों की खालें, पौधे, स्टफ्ड-पक्षी और सांप भी थे. साथ ही एल्क के सींग, एक जीवित गिलहरी, एक मुर्गी, और चार मैगपाई को पिंजरों में भेजे. उसके बाद लुईस और क्लार्क के खोजीदस्ते ने अपनी पश्चिम की यात्रा शुरु की.

इस दस्ते मैं सैकगुएया एकमात्र महिला थी. उसने दो महीने के बच्चे को अपनी पीठ पर बांधकर यात्रा की. जीन बैप्टिस्ट, समूह के सबसे कम उम्र का सदस्य था.

शुरु से ही सैकगुएया, लुईस और क्लार्क के अभियान की एक महत्वपूर्ण सदस्य थी. अगले दिन से ही उसने सदस्यों के लिए खाद्य-जड़ें, जंगली स्ट्रॉबेरी, प्लम, बेरी और करंट्स एकत्रित करना शुरू कर दिए.

14 मई को हवा की गड़बड़ी ने खोजकर्ताओं की नावों में से एक नाव को तेज़ी से एक ओर खींचा. उससे कैरबनेउ घबरा गया और उसकी पतवार गिर गई. लोगों ने नाव को बचाने के लिए काफी संघर्ष किया. सैकगुएया ने उन उपकरणों और दवाइयों को बचाया जो नाव से पानी में गिर गए थे.

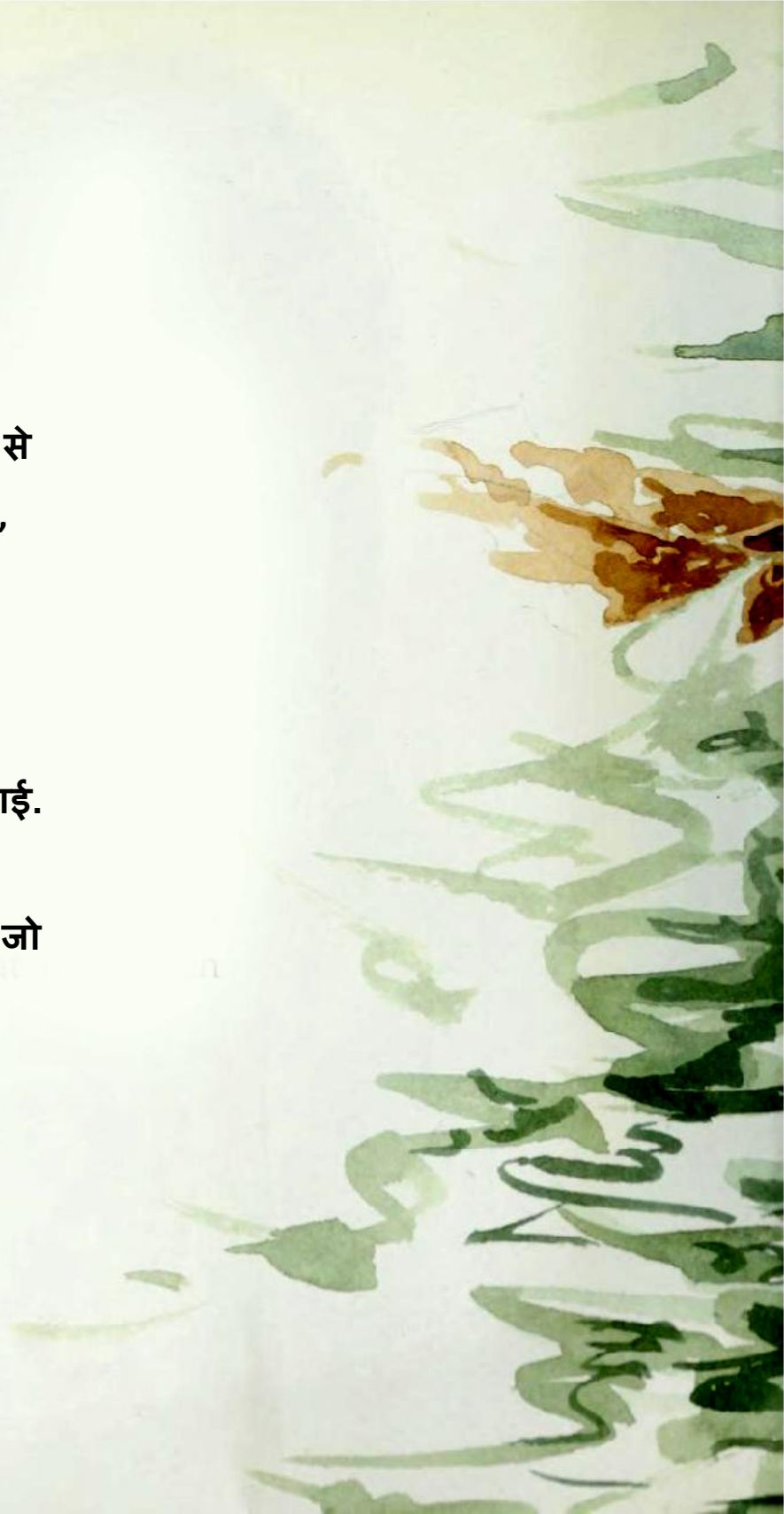

12 अगस्त को दस्ते ने कॉन्टिनेंटल डिवाइड को पार किया. यह उच्च भूमि की रेखा थी जो पूर्व से अटलांटिक की ओर बहने वाली नदियों को, प्रशांत महासागर से अलग करती थी.

अगले दिन, वे शोसोफोन जनजाति के लोगों से मिले. वे लोग सैकगुएया के रिश्तेदार थे. कप्तान क्लार्क ने अपनी डायरी में लिखा कि उन्हें देखकर, सैकगुएया की "आँखें ख़ुशी से नाचने लगीं."

कप्तान लुईस और क्लार्क एक तंबू में शोसोफोन नेता चीफ कैमावाइट के साथ मिले. उन्होंने एक-साथ, शांति पाइप पिया और फिर सैकगुएया के बुलवाने भेजा, क्योंकि वह शोसोफोन में बातें कर सकती थी.

चीफ कैमावाइट, सैकगुएया के भाई थे. सैकगुएया की सहायता से शोसोफोन जनजाति ने खोजकर्ताओं के लिए कई घोड़ों का इंतजाम किया. उन्होंने उनका मार्गदर्शन करते हुए बिटर-रूट पर्वतमाला के रास्ते उन्हें पश्चिम की ओर जाने का रास्ता भी दिखाया.

खोजकर्ता पश्चिम में कोलंबिया, क्लीयरवाटर, और स्नेक नदियों से आगे की ओर बढ़ते रहे. यात्रा कठिन थी. रास्ते में उन्हें भालूओं और रैटलस्नेक का सामना करना पड़ा. बीच-बीच में भीषण ठंड को भी सहना पड़ा. एक आदमी ने अपनी डायरी में लिखा, "हमारे जूतों का चमड़ा तक जम गया था." एक दूसरे व्यक्ति ने लिखा "वर्णन से परे थकाने वाला अनुभव था. सभी लोग भूख प्यास के मारे कमजोर होते जा रहे थे. खाने के लिए लोग एक-दूसरे के बछड़े मारने के लिए बाध्य हो गए थे."

रास्ते में खोजकर्ता कई जनजातियों से मिले. क्लार्क ने अपनी पत्रिका में लिखा, "क्योंकि सैकगुएया साथ में थी इस वजह से जनजातियों को हमारे इरादे नेक लगे. उन्हें यह विश्वास था की कोई भी महिला कभी किसी युद्ध-पार्टी के साथ नहीं देगी. उस औरत के साथ उसका छोटा बच्चा भी था."

नवंबर की शुरुआत में समूह ने समुद्र में समुद्री ऊदबिलाव को तैरते हुए देखा. तब उन्हें यकीन कि वे प्रशांत महासागर के नजदीक आ गए थे. उन्हें तरंगों की आवाज भी सुनाई दी. कप्तान क्लार्क ने अपनी डायरी में लिखा, “महासागर का दृश्य! आनन्दमयी था!”

सैकगुएया के लिए, “महान सागर” और "राक्षसी मछली" को देखना पूरी यात्रा के मुख्य आकर्षण थे.

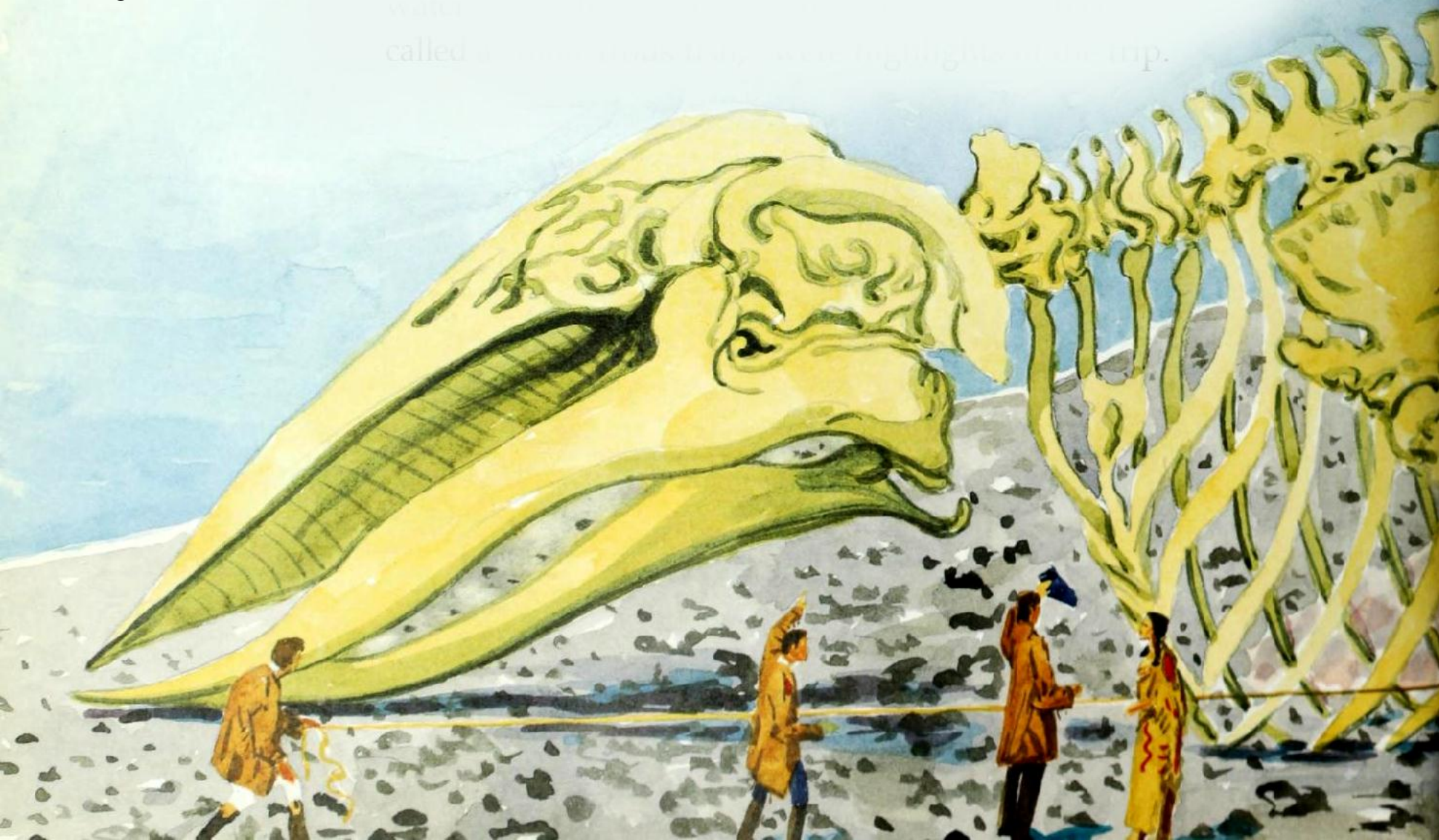

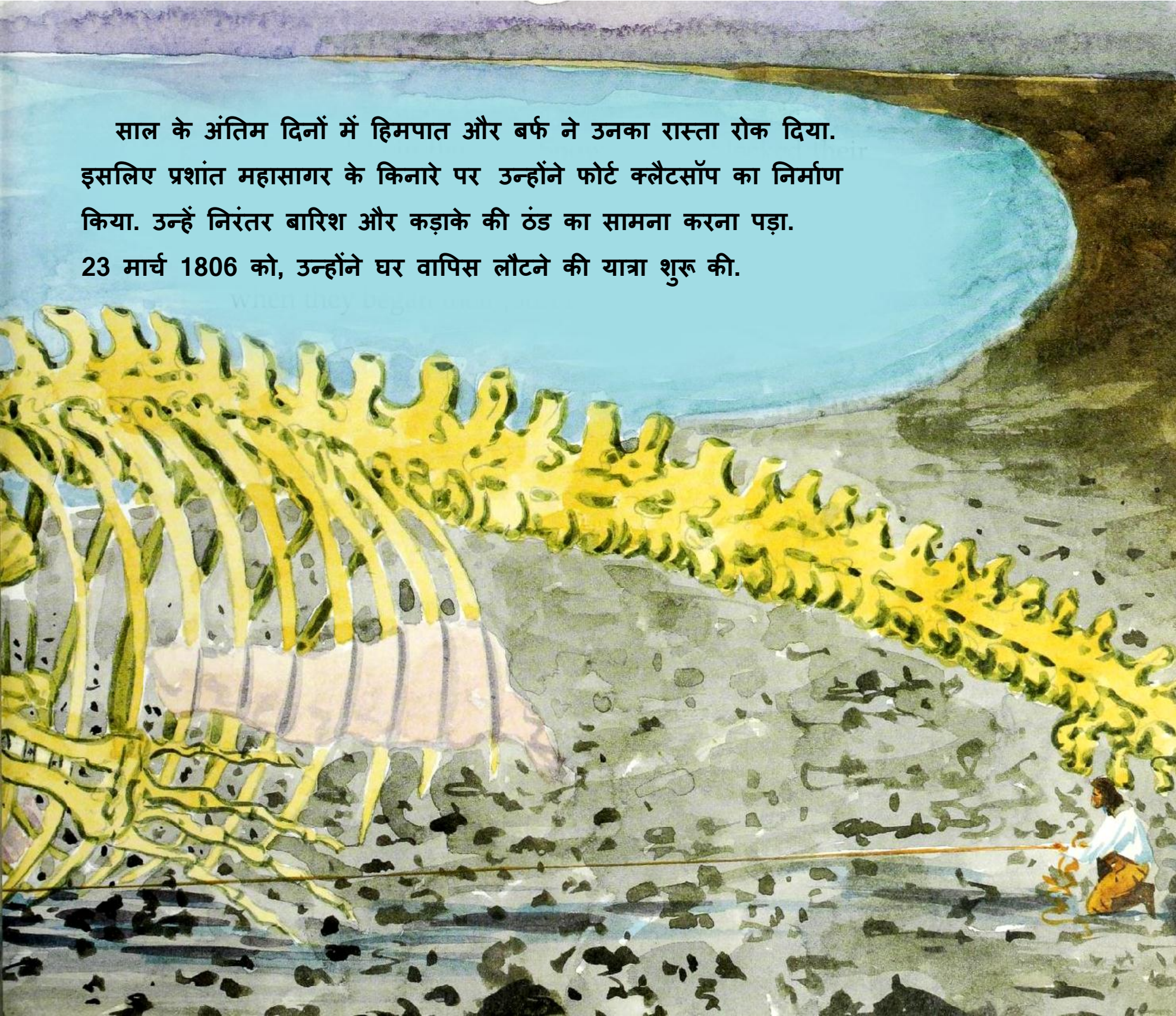

साल के अंतिम दिनों में हिमपात और बर्फ ने उनका रास्ता रोक दिया. इसलिए प्रशांत महासागर के किनारे पर उन्होंने फोर्ट क्लैटसॉप का निर्माण किया. उन्हें निरंतर बारिश और कड़ाके की ठंड का सामना करना पड़ा. 23 मार्च 1806 को, उन्होंने घर वापिस लौटने की यात्रा शुरू की.

अगस्त में खोजकर्ता मंडन किले पहुंच गए. सैकगुएया, कैरबनेउ, और जीन बैप्टिस्ट के लिए यह यात्रा का अंत था.

सितंबर में कैप्टन लुईस और क्लार्क, सेंट-लुईस वापिस पहुंचे. वे अपने साथ क्षेत्र के तमाम नक्शे और जानकारी लाए थे. उन्होंने कई मूल निवासी अमरीकी जनजातियों के साथ शांतिपूर्ण संपर्क भी बनाये थे.

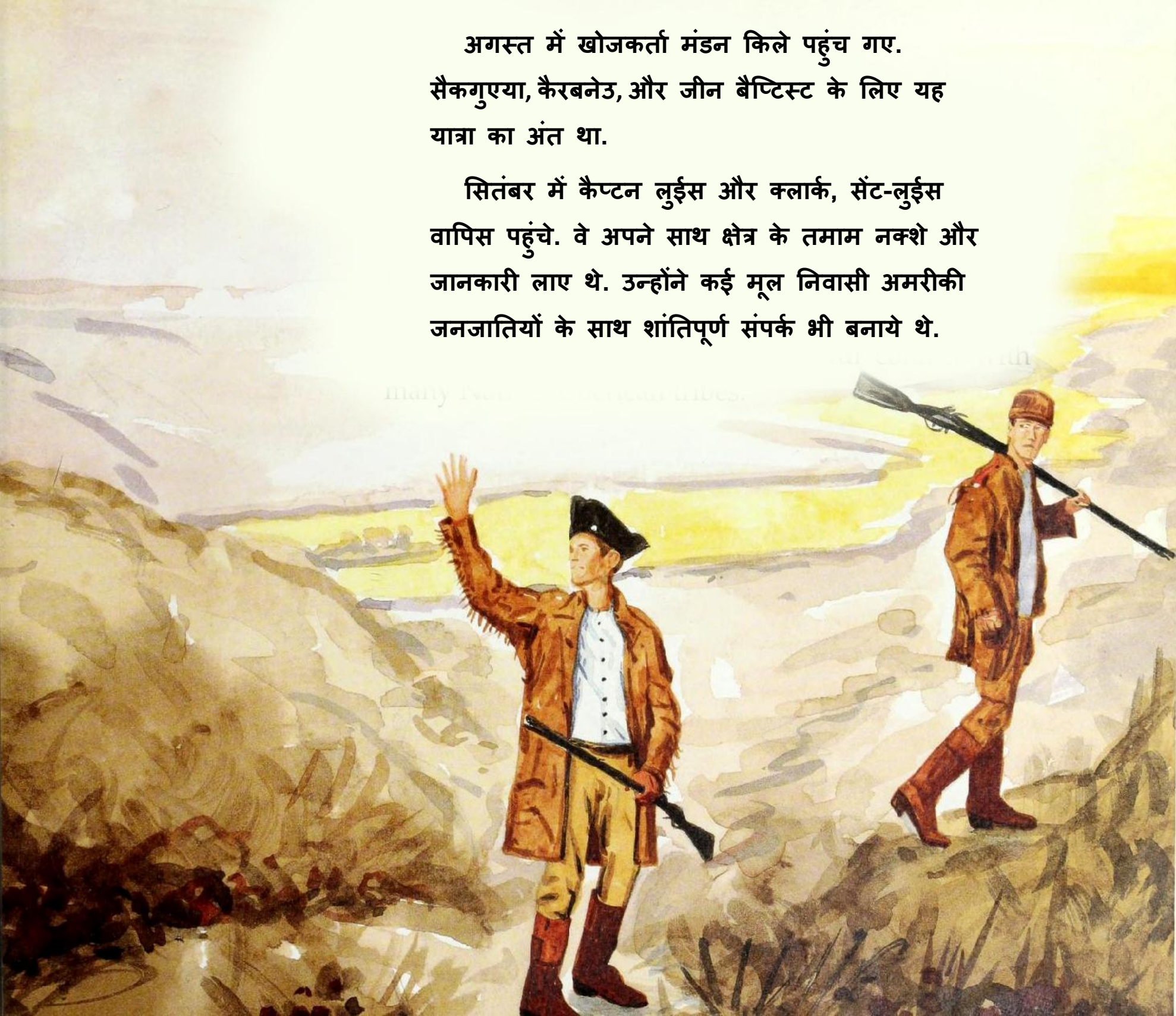

दिसंबर 1806 को राष्ट्रपति जेफरसन ने कांग्रेस को सन्देश लिखकर बताया - लुईस एंड क्लार्क का अभियान न केवल सफल रहा, बल्कि उम्मीद से ज्यादा सफल रहा ....

लुईस और क्लार्क, और उनके बहादुर साथियों ने देश के प्रति अपनी सच्ची निष्ठा और कर्तव्य दर्शाया था. इस अभियान के बाद सैकगुएया के बारे में भी लोगों को काफी जानकारी मिली.

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि कुछ साल बाद 20 दिसंबर, 1812 को "टाइफस ज्वर" से सैकगुएया की मृत्यु हो गई.

कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार सैकगुएया, शोसोफोन लोगों के पास लौट गईं और सत्तर साल बाद 9 अप्रैल, 1884 उनकी मृत्यु हुई.

बाद का इतिहास चाहें कुछ भी रहा हो पर सभी इतिहासकारों का मानना है कि लुईस और क्लार्क के सत्रह महीनों के अभियान में सैकगुएया की भागीदारी ने अभियान की सफलता में बहुत मदद की. इस अभियान ने महाद्वीप को संयुक्त राज्य अमरीका के लोगों के लिए खोल दिया.

मोन्टाना की एक नदी, वॉशिंगटन और नॉर्थ-डकोटा की एक झील, और मोन्टाना, वायोमिंग, ओरेगन और इडाहो के पहाड़ों को उनका नाम दिया गया. पूरे संयुक्त राज्य अमरीका में सैकगुएया की कई प्रतिमाएं बनाई गईं और उसके सम्मान में एक डॉलर के सिक्के पर भी उसका चित्र भी अंकित हुआ.

# महत्वपूर्ण तिथियाँ

1788 या 1789, पश्चिमी रॉकी पर्वत में जन्म, आज यह इडाहो के नाम से जाना जाता है.

1799 हिदासस का कब्जा और नाम सैकगुएया रखा, जिसका अर्थ है "बर्ड वुमन".

1803 संयुक्त राज्य अमेरिका ने फ्रांस से लुइसियाना क्षेत्र का खरीदा जाना.

14 मई, 1804 लुईस और क्लार्क ने सेंट लुइस, मिसौरी के नजदीक कैंप डुबोइस से अपनी खोज-यात्रा शुरू की.

नवंबर 1804, अपने पति के साथ सैकगुएया, लुईस और क्लार्क की टीम में शामिल हुए.

फरवरी 1805 में बेटा जीन बैप्टिस्ट का जन्म हुआ.

7 अप्रैल, 1805 अभियान ने किले मंडन को छोड़ा.

अक्टूबर 16, 1805 अभियान, कोलंबिया नदी पहुंच गया.

नवंबर 1805 को अभियान, प्रशांत महासागर में पहुंचा.

अगस्त 1806 को अभियान किला मंडन में लौटकर वापिस आया.

सैकगुएया की मृत्यु दिसंबर 20, 1812 या 9 अप्रैल 1884 को हुई.

# लेखक का नोट

सैकगुएया का जन्मस्थान वर्तमान में इडाहो में है. हिदाससा गांव आज उत्तर डकोटा में है. जब सैकगुएया शोसोफोन के साथ थी, तो उसका मानना था कि उसका नाम “हीटो” या “हुचू” था, जिसका अर्थ था “लिटिल बर्ड”. हिदासस को मिनेटैरी के रूप में भी जाना जाता था.

कुछ सूत्रों के मुताबिक, कैरबनेउ ने सैकगुएया को खरीदा नहीं, बल्कि उसे एक खेल में जीता.

कैप्टन क्लार्क ने अभियान की वापसी के तुरंत बाद यॉर्क को आजाद किया.

जीन बैप्टिस्ट कैरबनेउ - सैकगुएया का बेटा और अभियान के सबसे छोटा सदस्य बाद में एक फर व्यापारी और अन्वेषक बना. उसने कोलोराडो के बेंट किले में कुछ समय बिताया. एक जर्नल के अनुसार वो “मैदानों पर या रॉकी पर्वत पर पैरों पर चलने वाला सबसे नेक इंसान था.” 1840 दशक के मध्य में उसने कैलिफ़ोर्निया की यात्रा की और वो वहां 1866 तक टिका रहा. उस साल वसंत में, वो मोंटाना की सोने की खदानों में गया. वहां वो बीमार पड़ा और उसकी मृत्यु हुई.